

Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

Unit – III :

आधुनिक बिहार की शुरुआत

(Beginning of Modern Bihar)

1857 का विद्रोह और बिहार में राष्ट्रीय चेतना का उदय : वीर कुंवर सिंह की भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक आते-आते अंग्रेजी शासन की नीतियों के कारण भारत के विभिन्न क्षेत्रों में असंतोष की भावना गहराने लगी थी। आर्थिक शोषण, सामाजिक हस्तक्षेप, धार्मिक संदेह और सैन्य असंतोष—इन सभी कारणों ने मिलकर एक व्यापक विद्रोह की पृष्ठभूमि तैयार की। 1857 का विद्रोह इसी व्यापक असंतोष का विस्फोट था। यद्यपि यह विद्रोह प्रारंभ में सैनिक असंतोष के रूप में उभरा, परंतु शीघ्र ही यह जनआंदोलन का रूप धारण कर गया। बिहार भी इस ऐतिहासिक घटना से अछूता नहीं रहा। यहाँ के लोगों ने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष में सक्रिय भाग लिया, और इस संघर्ष का नेतृत्व जगदीशपुर के वीर सेनानायक वीर कुंवर सिंह ने किया।

वीर कुंवर सिंह शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर) जिले के जगदीशपुर राज्य के जमींदार थे। वे लगभग अस्सी वर्ष के वृद्ध थे, परंतु उनकी देशभक्ति, साहस और नेतृत्व क्षमता युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत थी। उस समय अंग्रेजी शासन की नीतियों के कारण जमींदारों और किसानों दोनों में असंतोष व्याप्त था। स्थायी बंदोबस्त के कारण भूमि संबंधों में उत्पन्न असमानता, अत्यधिक लगान, प्रशासनिक कठोरता और सामाजिक अपमान ने ग्रामीण समाज को विचलित

कर दिया था। इन परिस्थितियों में जब 1857 का विद्रोह उत्तर भारत के विभिन्न भागों में फैलने लगा, तब बिहार में भी प्रतिरोध की भावना जागृत हुई।

दानापुर छावनी के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया और वे जगदीशपुर की ओर बढ़े, जहाँ उन्होंने कुंवर सिंह से नेतृत्व की प्रार्थना की। प्रारंभ में वृद्धावस्था और संसाधनों की कमी के कारण संकोच के बावजूद, कुंवर सिंह ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष का निर्णय लिया। उनका यह निर्णय केवल व्यक्तिगत असंतोष का परिणाम नहीं था, बल्कि यह राष्ट्रीय स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा का संकल्प था। उन्होंने स्थानीय सैनिकों, किसानों और आम जनता को संगठित किया और एक सशक्त प्रतिरोध आंदोलन की शुरुआत की।

कुंवर सिंह की सैन्य रणनीति अत्यंत प्रभावशाली थी। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध पद्धति अपनाई, जिससे अंग्रेजी सेना को कई बार कठिनाई का सामना करना पड़ा। वे स्थानीय भूगोल से भली-भाँति परिचित थे और इसका लाभ उठाते हुए उन्होंने अंग्रेजों को कई मोर्चों पर चुनौती दी। आरा और जगदीशपुर के क्षेत्रों में संघर्ष अत्यंत तीव्र था। एक प्रसंग विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जब गंगा नदी पार करते समय उनका हाथ गोली से घायल हो गया। कहा जाता है कि संक्रमण फैलने से रोकने के लिए उन्होंने स्वयं अपना घायल हाथ काटकर गंगा को समर्पित कर दिया। यह घटना उनकी अदम्य साहस और त्याग की प्रतीक मानी जाती है।

यद्यपि अंततः अंग्रेजों ने अपनी संगठित सैन्य शक्ति के बल पर विद्रोह को दबा दिया, परंतु बिहार में इस संघर्ष ने गहरी छाप छोड़ी। कुंवर सिंह ने अंतिम समय तक संघर्ष किया और 1858 में उनका निधन हो गया। उनका जीवन और बलिदान बिहार की जनता के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया। वे केवल एक क्षेत्रीय सेनानायक नहीं थे, बल्कि राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

1857 का विद्रोह बिहार में आधुनिक राजनीतिक जागरण की शुरुआत के रूप में देखा जा सकता है। यद्यपि यह विद्रोह तत्कालीन परिस्थितियों में सफल नहीं हो सका, परंतु इसने अंग्रेजी शासन की अजेयता के मिथक को तोड़ दिया। जनता के मन में यह विश्वास उत्पन्न हुआ कि विदेशी सत्ता का प्रतिरोध संभव है। इस विद्रोह ने किसानों, सैनिकों और जमींदारों को एक साझा मंच पर लाने का कार्य किया, जिससे सामूहिक संघर्ष की भावना विकसित हुई।

इस विद्रोह के बाद अंग्रेजी शासन ने प्रशासनिक ढाँचे में कई परिवर्तन किए। कंपनी का शासन समाप्त कर भारत को सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दिया गया। इससे औपनिवेशिक नियंत्रण और अधिक सुदृढ़ हुआ, परंतु साथ ही भारतीय समाज में राजनीतिक चेतना का विस्तार भी हुआ। बिहार में शिक्षित वर्ग और नवजागरण की प्रक्रिया को अप्रत्यक्ष रूप से बल मिला। आने वाले दशकों में यही चेतना राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला बनी।

इस प्रकार 1857 का विद्रोह आधुनिक बिहार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इसने न केवल अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष की परंपरा को सुदृढ़ किया, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक जागरण की प्रक्रिया को भी गति प्रदान की। वीर कुंवर सिंह का योगदान इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनका जीवन यह प्रमाणित करता है कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष आयु या संसाधनों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि साहस, नेतृत्व और आत्मबल पर आधारित होता है। आधुनिक बिहार की राष्ट्रीय चेतना के विकास में उनका स्थान सदैव स्मरणीय रहेगा।